आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2732 • उदयपुर, शनिवार 18 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को गजानन मंगलम शंकर नगर पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता दिव्यांग सेवा समिति पुसद (महाराष्ट्र) रही। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 162, कृत्रिम अंग माप 31, कैलिपर माप 10 की सेवा हुई तथा 37 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अनिल जी आडे (उपविभागीय पुलिस अधिकारी, पुसद) अध्यक्षता डॉ. किरण सुकतवाउ (मुख्य अधिकारी नगर परिषद, पुसद) विशिष्ट अतिथि डॉ. सिमलाई वानखेड़े (अधीक्षक, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् राम महाराज (भागवताचार्य दिग्रस), श्रीमान् सुरेन्द्र सिंह जी राठौड़ (अध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्री राधेश्याम जी जांगीड़ (अध्यक्ष, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् दयाराम जी चव्हाण (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्रीमान् हरिप्रसाद जी विश्वकर्मा (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), विनोद जी राठौड़ (सेवा प्रेरक, नांदेड़) रहे।

डॉ. वरुण जी श्रीमाल (ऑर्थोपेडिक सर्जन), रिहांस जी महता (पी.एन.डो.), किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

शेगांव, जिला बुलढ़ाणा (महाराष्ट्र) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 29 व 30 मई 2022 को माहेश्वरी भवन, शेगांव में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रोटरी क्लब, भोगांव (महाराष्ट्र) रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 171, कृत्रिम अंग वितरण माप 142, कैलीपर माप 29 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् ज्ञानेश्वर जी पाटील (माऊली संस्था, अध्यक्ष), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् विजय जी यादव साहब (उद्योगपति), श्रीमान् नंदलाल जी मूंदड़ा (शाखा संयोजक शेगांव शाखा), श्रीमान् सी.ए. आशीश जी (रोटरी अध्यक्ष), श्रीमान् दिलीप जी भूतड़ा (प्रोजेक्ट मेनेजर, रोटरी), अध्यक्ष श्रीमान् रमेश जी काश्वानी (उद्योगपति) रहे।

नेहांशा जी मेहता (पी.एन.डो.), भंवरसिंह जी चौहान, लोकेन्द्रसिंह जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में मुकेश कुमार भार्मा (शिविर प्रभारी), सुनिल जी (उपप्रभारी), हरीश सिंह जी रावत, कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 19 जून, 2022

▪ मंगलम पोलो ग्राउण्ड के सामने, कोर्ट रोड, शिवपुरी मध्यप्रदेश

▪ गीता आश्रम, हनुमान चौराहा, जैसलमेर, राजस्थान

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

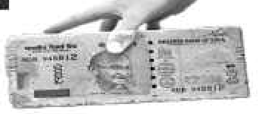

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
" 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल " 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त" निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी " भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट " प्रज्ञाचक्षु , विमदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 29 व 30 मई 2022 को अग्निहोत्री गार्डन, होशंगाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 145, कृत्रिम अंग वितरण 135, कैलिपर वितरण 32 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प. श्री सोमेश जी परसाई (भागवताचार्य) अध्यक्षता श्रीमान् समर सिंह जी (धनलक्ष्मी मचेन्टडाइज, प्रबन्धक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान विपिन जी जैन (सचिव, रोटरी क्लब), श्रीमान् आशिश जी अग्रवाल (कार्यक्रम संयोजक), श्रीमान् प्रदीप जी गिल्ला (रोटरी क्लब, अध्यक्ष), श्रीमान् शील जी सोनी (रोटरी क्लब, संरक्षक), श्रीमान् राजीव जी जैन, श्रीमान् समीर जी हरडे (रोटरी क्लब सदस्य) रहे। डा.सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन. डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

श्रीराम भगवान ने अपने मंत्रियो से सुग्रीवजी, विभीषणजी, अगंदजी, हुनमानजी से मत्रंणा की। बोले दूत भेजना चाहिये। तो जामवन्तजी ने कहा– अगंदजी को दूत बना के भेजना चाहिये। और प्रभु बहुत मुस्कराये, अगंदजी को कहा कि– अगंदजी आप हमारे बड़े प्रिय हैं। ऐसा काम करना जिसमें अपना हित हो जाय। सबका मंगल हो और रावण का भी सुधार हो जाय। उसका वध करना मेरा लक्ष्य नहीं है। उसके मन में जो खराब है संस्कारो को मिटाना मेरा लक्ष्य है। संस्कार अच्छे हो जावे, कुसंस्कार अच्छे संस्कारो में बदल जावे। किसी की यदि अपमान करने की आदत हो वो मान करने लग जावे। कोई अच्छा नहीं बोले वो सम्मान करने लग जावे। अपने विवेक के बल से। अपनी प्रज्ञा को जागृत करके सत्य के बल से। सत्यम् परम् धीमहि। सत्य ही परम धर्म है।

ऐसा कहा गया तुलाधार वैश्य के पास जाबाली ऋषि आये कि– आकाशवाणी हुई है, मेरे को सिद्धि प्राप्त थी। मैं अपने कपड़े हवा में डालता और सूख जाते थे। फिर एक कबूतर ने बीट कर दिया, कबूतर की बीट देखकर मुझे गुस्सा आया। मैंने क्रोध में श्राप दे दिया, वो कबूतर जलकर भस्म हो गया। उस समय आकाशवाणी हुई –आप तुलाधार वैश्य के पास जाइये। और तुलाधार वैश्य के पास गये तो तुलाधार वैश्य ने ये समझाया था–मैं सत्य का काम करता हूँ। मैं कम नहीं तोलता, मैं छल नहीं करता, मैं मिलावट नहीं करता। आप अपने आप को जरा बार– बार कहीं खड़ा करके अपने आप से प्रश्न कीजिये। मैंने क्या खोया है और क्या पाया है? जब– जब आपने प्रेम रखा, आपने बहुत कुछ पा लिया। और जब ईर्ष्या–द्वेष किया, छल–कपट किया बहुत कुछ खो दिया।

लाला, ये दुःख को हम ही समाप्त कर सकते है। आत्म दिपो भवः। अपना दिया खुद जलाना होगा। अपना भोजन खुद पचाना होगा। अपना सांस स्वयं लेना होगा।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

थैंक्यू नारायण सेवा

पेशे से ट्रक ड्राईवर अरुणसिंह की जिंदगी का सबसे बुरा दिन वो था जब एक दिन उनकी गाड़ी पर 11 हजार वोल्टेज बिजली का तार गिर पड़ा। उसे दोनों पांव और एक हाथ गंवाना पड़ा। उनका भाई कहता है–जी मेरा नाम अतुलसिंह, मेरे भैया अरुणसिंह मैं जादोन यू.पी. का रहने वाला हूं। मेरे भैया पेशे से ट्रक ड्राईवर थे और दो पैसे कमाकर परिवार का पालन– पोषण करते थे।एक दिन अचानक ऐसा आया कि मेरे भैया की गाड़ी पर 11 हजार वोल्टेज हाई टेंशन का तार गिर गया जिस कारण से पूरी गाड़ी में करंट आ गया।

मेरे भैया उसी में बैठे हुए थे। करंट के कारण झुलस गये और जिस कारण से मेरे भैया के दोनों पैरों को और एक हाथ भी गंवाना पड़ा, फिर उसके बाद काफी इलाज चलाना पड़ा। और हम पूर्णरूप से बर्बाद हो चुके थे भैया का इलाज करवाने में। बड़ी दुःख की बात तो ये है कि मेरी बहनों और मेरी खुद की पढ़ाई भी बंद हो चुकी थी। मुझे टी. वी. पे नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी हुई। यहां पर सारी सुविधाएं निःशुल्क है। और हम यहां पर आये हैं भैया के पैर लगे हैं तो मुझे बहुत खुशी हुई है। थेंक्यू नारायण सेवा संस्थान।

सम्पादकीय

भक्ति जगत् में दो वाक्यांश प्रचलित हैं। एक है–हरिकृपा और दूसरा है हरि इच्छा। यदि अपने अनुकूल कोई कार्य संपादित हो गया तो हरिकृपा। यदि कोई कार्य अपने मनानुसार नहीं हो पाया तो हरि इच्छा। यानी जो कुछ भी हुआ वह केवल मेरे प्रयास से संभव न था। प्रयास तो हरेक व्यक्ति करता ही है पर सफलता हरेक को कहाँ मिलती है, इसलिये जब तक हरिकृपा नहीं होगी तब तक कार्य हो पाना असंभव है। श्रेय मेरा नहीं हरि का है। मैं तो केवल चाहने वाला या करने वाला हूँ, कराने वाला तो हरि ही है।

ठीक वैसे ही कोई कार्य मेरे अनुसार नहीं हो पाया तो उसमें हरि की इच्छा रही होगी, क्योंकि हो सकता है यह समय उस कार्य की सिद्धि के लिये ठीक नहीं होगा। मैंने तो चाहा व किया पर वह उचित था कि नहीं, अभी आवश्यक था या नहीं ? यह तो हरि ही जानता है। इसलिये नहीं हो पाया तो मैं क्यों मन में मलाल रखूं। हरि इच्छा थी कि यह कार्य अभी इस रूप में न हो। ये दोनों सूत्र अहंकार और विषाद दोनों आवेगों को नियंत्रित करने के रामबाण सूत्र हैं। इन्हें अपनाने वाला सदा प्रसन्न व निर्भार रहता है।

कुछ काव्यमय

सत्संग का साबुन
अंतस् के मैल से
मुक्त कर देता है।
निर्मल मन वाला ही
परमात्मा के दिल में
प्रवेश लेता है।
पावन करने हो,
हमारे बाह्य व अंतर अंग।
तो भगीरथ प्रयास है,
नियमित सत्संग।

अपनों से अपनी बात

हम तो निमित्त हैं

सृष्टिकर्त्ता ने एक दिन सोचा कि धरती पर जाकर कम से कम अपनी सृष्टि को तो देखा जाये। धरती पर पहुँचते ही सबसे पहले उनकी दृष्टि एक किसान की ओर गई। वह कुदाली लिये पहाड़ खोदने में लगा था। सृष्टिकर्त्ता प्रयत्न करने पर भी अपनी हँसी न रोक पाये। उस इतने बड़े कार्य में केवल एक व्यक्ति को लगा देख और भी आश्चर्य हुआ। वह किसान के पास गये, उन्होंने कारण जानना चाहा तो उसका सीधा उत्तर था। महाराज ! मेरे साथ कैसा अन्याय है ? इस पर्वत को अन्यत्र स्थान ही नहीं मिला। बादल आते हैं, इससे टकराकर उस ओर वर्षा कर देते हैं और पर्वत के इस ओर मेरे खेत हैं वे सूखे ही रहते हैं। क्या तुम इस विशाल पर्वत को हरा सकोगे ? क्यों नहीं ? मैं इसे हराकर ही मानूँगा, यह मेरा दृढ़ संकल्प है। सृष्टिकर्त्ता आगे बढ़ गये। उन्होंने सामने पर्वतराज को याचना करते देखा। वह हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहा था विधाता, इस संसार में सिवाय आपके मेरी रक्षा कोई नहीं कर सकता। क्या तुम इतने कायर हो,

जो कि किसान के परिश्रम से डर गये मेरे भयभीत होने के पीछे जो करण है, क्या आपने अभी–अभी नहीं देखा कि किसान में कितना आत्म–विश्वास है, वह मुझे हटाकर ही मानेगा। अगर उसकी इच्छा इस जीवन में पूरी न हुई तो उसके छोड़े हुए काम को उसके पुत्र और पौत्र पूरा करेंगे और मुझे भूमिसात करके ही दम लेंगे। आत्म विश्वास असंभव लगने वाले कार्यों को भी संभव बना देता है, – पर्वतराज ने कहा।

आज मानवता कराह रही है – दानवता हँस रही है। समाज में दुःखों का अन्त नजर नहीं आ रहा है। और सूर्य की किरणें हर घर तक पहुँचने में पूर्ण समर्थ नहीं है पर वनांचल में दुःखों के अन्धकार का साम्राज्य आज भी मौजूद है। समाज में व्याप्त दुःखों का एक पहाड़ खड़ा है। आपश्री के सहयोग, वरदहस्त, संरक्षण से संस्थान भी उसी किसान की तरह दृढ़ संकल्प एवं आत्म विश्वास के साथ इस पहाड़ को गिराने में लगा है। कार्य बहुत बाकी है अभी मंजिल का रास्ता मिला है, मंजिल अभी दूर है। हमारा विश्वास प्रबल है, कदम इसी दिशा में बढ़ रहे हैं, साथ एक सम्बल आपका पुरजोर मिल रहा है, तथापि आवश्यकता है अधिक हाथों की। हजारों मन से संकल्प उठने की। जी हाँ, साथ आपश्री का आशीर्वाद इसी प्रकार मिलता रहेगा, अगर समाज में फैली असमानता की खाई को जीवन पर्यन्त लगे रहने के बाद भी हम पूरा नहीं कर पायेंगे तो जो आज बालगृह में बच्चे शिक्षित हो रहे हैं, जो विधवाएँ स्वावलम्बी प्रशिक्षण ले रही हैं, जो विकलांग ऑपरेशन के बाद खड़े होकर चल रहे हैं वे इस कार्य को पूरा करेंगे। अगर इस हेतु पुनः जन्म भी लेने की आवश्यकता रही तो इसी कार्य हेतु जन्म दें, यही, प्रार्थना प्रभु से निरन्तर रहेगी।

प्रभु का कार्य है – प्रभु ही कर रहे हैं –हम सब हैं निमित्त मात्र।

–कैलाश 'मानव'

शब्दों का महत्व

अपेक्षाएँ दुःखों को जन्म देती हैं। हम परिवार के सदस्यों के साथ अधिक मोह एवं आसक्ति रखते हैं, यही मोह व आसक्ति मनुष्य के दुःख का कारण बनती है। मोह में बंधकर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को भूल जाता है। कर्तव्यों को भूलना नुकसानदायक होने के साथ– साथ कष्टकारक भी होता है।

जिह्वा ही शरीर का सबसे ज्यादा अच्छा और सबसे खराब भाग है। यही शत्रुता और यही मित्रता लाती है। अधिकतर लड़ाई–झगड़े आपसी मतभेद की वजह से कम, लेकिन जिह्वा के अनुचित प्रयोग की वजह से ज्यादा होते हैं। एक बार की बात है, एक राजा अपने सैनिकों और मंत्रियों के साथ किसी स्थान पर भ्रमण कर रहे थे। अचानक राजा को प्यास लगी और उन्होंने अपने सैनिक से पानी लाने

को कहा। सैनिक पानी की तालाब में इधर–उधर गया। थोड़ी देर बाद उसे दूर कहीं एक अंधा व्यक्ति पानी के मटके के साथ बैठा मिला। सैनिक उसके पास गया और बोला, "ऐ अंधे! महाराज को प्यास लगी है, पानी दे।" सैनिक की बात सुनकर अंधे ने सैनिक से कहा, "जाओ, मैं तुम्हें पानी नहीं दूँगा, तुम सैनिक हो, सैनिक ही रहोगे।" सैनिक ने यह बात राजा को बताई। राजा ने अपने मंत्री को अंधे के पास पानी लाने भेजा। मंत्री ने अंधे से कहा, "ओ अंधे महाशय, राजा हेतु पानी दीजिए।" मंत्री की बात सुनकर अंधे ने मंत्री से कहा, "हे मंत्री! तुम कुटिल व्यक्ति हो और मैं कुटिल व्यक्तियों को पानी नहीं देता।" मंत्री ने सारा वृतान्त राजा को कह सुनाया। इस बार राजा स्वयं उस व्यक्ति के पास गए और कहा, "हे महात्मन्! मुझे प्यास लगी है और मैं आपसे पानी की याचना करता हूँ।" अंधे व्यक्ति ने सहर्ष राजा को पानी दिया। पानी पीने के पश्चात् राजा ने उससे पूछा, "हे सज्जन पुरुष! यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि आप देख नहीं सकते तथापि आपने सैनिक, मंत्री और मुझे पहचान लिया कि कौन क्या है? आपने उन दोनों को पानी देने से मना कर दिया और आपने मुझे आदरपूर्वक पानी पिलाया।"

राजा की बात सुनकर उस व्यक्ति ने सम्मानपूर्वक कहा, "हे राजन् उनके द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों के आधार पर ही मैं पहचान पाया कि कौन क्या है? निम्न स्तर के शब्दों का प्रयोग निम्न प्राणी ही करता है और सम्मानीय शब्दों का प्रयोग कुलीन व्यक्ति करता है। पानी देने या न देने के पीछे कारण भी, शब्दों का प्रयोग ही है।" शब्दों के द्वारा ही आपकी पहचान होती है। शब्दों में स्नेह और विनम्रता सुनने वाले शत्रु को भी मित्र बना देते हैं तथा शब्दों की कड़वाहट और निष्टता परिवार के सदस्यों को भी शत्रु बना देती है। अतः शब्दों में क्रोध कभी भी नहीं लाएँ। – **सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

एलिजारोव के बच्चे का एक पैर छोटा था, वह अपने बेटे के दोनों पैर बराबर करने की चिन्ता में रहता था। इसी चिन्ता में उसने ऐसा आविष्कार कर डाला कि पूरी दुनिया के पोलियो ग्रस्त बच्चों के जीवन में आशा का संचार हो गया। एलिजारोव ने साईकिल की रिंगों से ही उसने यह आविष्कार कर डाला। पोलियो ग्रस्त बालक के पांवों में तीन रिंगें पहनाते हैं। तीनों रिंगों को जोड़ने एक रोड लगाई जाती है। यह सारा कार्य एक ऑपरेशन के जरिये किया जाता है। ऑपरेशन के बाद जब स्क्रू खोलते हैं तो प्रतिदिन पांव एक एम.एम. बढ़ जाता है। यह ऑपरेशन इतना सफल हुआ कि इसका नाम ही डा. एलिजारोव पर पड़ गया।

चैनराज लोढ़ा, कैलाश के पूर्व परिचित थे। उन्होंने कैलाश को मुम्बई बुलाया। दोनों मिलकर उस डॉक्टर के पास गये जिसने यह विज्ञापन दिया था। यह एक अस्पताल था जहां इस तरह क ऑपरेशन होते थे। प्रत्येक ऑपरेशन का मूल्य एक लाख रु. था। कैलाश ने डॉक्टर को कहा कि गांवों में ऐसे कई बच्चे हैं जिन्हें इस ऑपरेशन की आवश्यकता है, उनके पास खाने तक का पैसा नहीं है, ईलाज तो बहुत दूर की बात है। ऐसे बच्चों का ऑपरेशन करवाने के लिये लोगों से चन्दा कर पैसा इकट्ठा करना पड़ेगा।

डॉक्टर, कैलाश व चैनराज की बातों से प्रभावित हो गया। उसके लिये यह घोर आश्चर्य का विषय था कि कोई गरीब आदिवासी बच्चों के इलाज के बारे में जानकारी प्राप्त करने इतनी दूर आया है और चन्दा कर उनके ऑपरेशन करवाने को तैयार है। डॉ. ने भी इन दोनों को आश्चर्य में डालते हुए कहा कि वह सिर्फ 8 हजार रु. में ऑपरेशन करने को तैयार है। डॉ. की पहल से दोनों प्रसन्न हो गये। अब उससे विनती की कि इतने बच्चों को जांच के लिये मुम्बई लाना तो संभव नहीं हो पायगा, अगर गांव में ही जांच शिविर लगा कर चयनित बच्चों का ऑपरेशन मुम्बई में करें तो क्या यह संभव हो पायेगा। डॉ. इसके लिये भी तैयार हो गया तो दोनों खुशी खुशी अस्पताल से लौटे और शिविर कहां लगाना, कैसे लगाना है इस बारे में विचार करने लगे। चैनराज लोढ़ा घाणेराव सादड़ी के निवासी थे। उनकी इच्छा थी कि पहला शिविर उनके गांव में ही लगाया जाय। कैलाश को कोई आपत्ति नहीं थी, उसका तो मन इस बात से प्रसन्न हो रहा था कि वह सेवा के एक अभूतपूर्व, अनछुए पक्ष में पहल करने जा रहा था। शिविर की तिथियां तय कर आसपास के गांवों में प्रचार कर दिया।

अंश - 129

सेहत व पर्यावरण के लिए घर में लगाएं औषधीय पौधे

पर्यावरण और जीवन के बीच अटूट रिश्ता है और इस रिश्ते के बीच की महत्त्वपूर्ण कड़ी है पेड–पौधे। ये पेड़–पौधे हमारे डॉक्टर हैं। दादी–नानी के नुस्खों का आधार भी यही पेड़–पौधे हुआ करते थे। आपने देखा होगा कि पुराने समय में घरों में औषधीय महत्त्व वाले पौधे अवश्य लगाए जाते थे, ताकि उनसे छोटी बीमारियों का उपचार किया जा सके।

गिलोय – इसे हार्ट लीफ मूनसीड भी कहा जाता है। घर में नीम का पेड़ है तो इसकी बेल को नीम पर चढाएं। गुणवत्ता बढ़ेगी।

फायदेः इसे काढ़े व ताजा रस के रूप में लिया जा सकता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स व एंटी–इफ्लैमेटरी गुण होते हैं। यह इम्युनिटी बढ़ाने में सहायक है।

हड़जोड़ – इसकी खंडाकार बेल होती है। उसके हर खंड से एक नया पौधा पनप सकता है। इस पौधे की प्रकृति गर्म है।

फायदेः इसे चूर्ण या लेप की तरह उपयोग किया जाता है। शरीर की टूटी हुई हड्डियों को जोड़ता है। ऑस्टियोपोरोसिस में कारगर है।

एलोवेरा – यह बड़ी आसानी ये उग जाता है। इसे अधिक पानी की आवश्यकता भी नहीं है। इसे बढ़ने के लिए अच्छी धूप चाहिए।

फायदे : आप इसे जूस के रूप में और सब्जी बनाकर भी खा सकते हैं। यह अच्छा हाइड्रेटिंग एजेंट है। जलने, त्वचा और बालों सम्बंधी समस्याओं में यह कारगर है।

अश्वगंधा – आयुर्वेद में इसका व्यापक उपयोग है। यह सब–ट्रोपिकल जगहों पर अच्छा बढ़ता है।

फायदेः इसकी जड़ों का चूर्ण दूध के साथ ले सकते हैं। यह नर्वस सिस्टम के लिए अच्छा टॉनिक और इम्युनिटी बूस्टर है।

पत्थरचट्टा – इसे आयुर्वेद में भष्मपथरी, पाषाणभेद और पणपुट्टी भी कहा जाता है।

फायदे : इसका जूस या चूर्ण ले सकते हैं। यह पथरी के लिए प्रयोग किया जाता है और अच्छा डाइयूरेटिक हैं।

कालमेघ – कालमेघ को देसी चिरायता भी कहते हैं। यह बेहद कड़वा पौधा है।

फायदे : लिवर संबंधी समस्याओं जैसे फैटी लिवर, पीलिया में फायदेमंद है। अच्छा ब्लड प्यूरीफायर है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

एक भैया के पास रेत में सीमेंट डालकर हल्का मसाला बना लिया गया। हल्का मसाला बना कर के जहाँ क्षेत्रों को विभाजित किया वहाँ ईंटें लगा दी। यह क्षेत्र यहाँ करीबन 40000 स्क्वायर फिट का क्षेत्र हेल्थ वंडर वर्ल्ड के लिए बाबू– भैया। कितने लोग आए कितने चले गए। एक चक्रवर्ती सम्राट ने कहा अपने मंत्री को। मंत्रीवर सुमेरु पर्वत पर अन्य चक्रवर्ती सम्राटों के भी नाम लिखे हुए हैं। मेरा भी नाम लिखवा दीजिए। मंत्री जी ने कहा जो आज्ञा और सुमेरु पर्वत पर पहुँचे, तो इतने नाम लिखे हुए थे चक्रवर्ती सम्राटों के लाखों– करोड़ों की 2 इंच की जगह भी खाली नहीं थी। उन्होंने कहा महाराज क्या करें? जगह तो खाली नहीं है। आपका नाम कहां लिखें ? करोड़ों नाम लिखे गए हैं। आपके पूर्व करोड़ों चक्रवर्ती सम्राट आप कहो तो किसी का नाम मिटाकर के आपका नाम लिख दें। बोले ऐसी भूल मत करना। नहीं नहीं नहीं जैसे ही यहाँ कुपरम्परा डालोगे, तुरंत मेरा नाम भी मिटा कर कोई अपना नाम लिख देगा। ना ना ना कोई बात नहीं। मेरी जनता जनार्दन प्रजा के दिल में मेरा नाम लिखा हुआ है

बने सहारा बेसहारों के लिए।
बने किनारा भ्रमित नावों के लिए।।
जो जिये अपने लिए तो क्या जिये।
जी सके तो जियें हजारों के लिए।।

लाला कितने योगीराज हुए? हां रवि वर्मा जी का एक चित्र विपश्यना के आचार्य श्री सत्यनारायण जी गोयंका साहब जो स्वर्ग से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। उन्होंने कहा मेरे घर में एक मंदिर मेरे पिताजी शिव जी के बड़े भक्त रवि वर्मा के चित्र बहुत सुंदर चित्र नदी बह रही है। तट पर एक चट्टान पर शिव भगवान समाधि में स्थित है।

उन्होंने कहा मेरा भी मन होता था मैं भी ऐसी समाधि लगाऊं। पास में कृष्ण भगवान का भी चित्र, और 31 साल की उम्र में आदरणीय सत्यनारायण जी गोयनका साहब को विपश्यना वरदान के रूप में मिली। वही विपश्यना साधना मुझे भी भगवान की कृपा और मेरे बहुत गहरे मित्र भाईवत डॉक्टर नागेंद्र जी नीरज साहब जो मेरे साथ भी उदयपुर में 2 साल रहे थे, और वर्तमान में पतंजलि के सेवा योगग्राम में विभागाध्यक्ष के पद पर है। उन्होंने मुझे कहा कैलाश जी भाई साहब आपकी इच्छा हो तो अपन विपश्यना ध्यान के लिए चलें। मैंने कहा जरूर अवश्य चलें, नासिक पहुँचे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 482 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023